C-10

> Date ☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

De-institutionalization Education
संस्थारहित शिक्षा

'संस्थारहित' का अर्थ — अपंग बालको को संस्थाओं से निकालकर नये वातावरण मे स्थापित करना।

संस्थारहित शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अधिक से अधिक प्रतिभाशाली बालको तथा युवक छात्राओं की सीमाओं को समाप्त कर देती है जो आवासीय विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं एवं उन्हे जनसाधारण के मध्य शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान करते है।

मानकीकरण (Normalisation)

मानकीकरण या सामान्यीकरण वह प्रक्रिया है जो प्रतिभाशाली बालको तथा युवको जहाँ तक सम्भव हो कार्य सीखने के लिए सामान्य सामाजिक वातावरण उत्पन्न करती है तथा अशक्त बालको को सीखने हेतु सामाजिक विचारधाराओं को परिवर्तित करना चाहिए जिससे वे सामान्य बालको की तरह ही प्रगति कर सकें।

Scanned with CamScanner

Concept of Mainstreaming
शिक्षा की मुख्यधारा का प्रत्यय

शिक्षा की मुख्यधारा के प्रत्यय का श्रेय सेम्युअल ग्रिडले होव एक अमेरिकन विद्वान को जाता है जिसने अपने कार्यों में दृष्टि व श्रवण रूप से बाधित बालकों के शिक्षण में उत्सुकता से रुचि ली। होव ने अन्धे बालकों की शिक्षा को सामान्य विद्यालय में शिक्षा देने पर बल दिया क्योंकि इसमें सामाजिक समायोजन के अवसर प्रस्तुत हो सकते हैं। उन्होंने अपंग तथा शारीरिक रूप से बाधित बालकों की शिक्षा सामान्य बालकों के सम्पर्क में रख देने की भी वकालत की।

1975 ई० में अमेरिका में शिक्षा की मुख्य धारा के प्रत्यय को प्रारम्भ किया तथा सभी अपंगों के लिए शिक्षा के बारे में स्पष्ट भी बना दिया गया।

शिक्षा की मुख्य धारा शिक्षण स्थापना की विधियों को प्रयुक्त करती है - जो निम्न है—

1. अपंग बालकों को विस्तृत क्षेत्र में विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता होती है।
2. अपंग बालकों की विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता अधिक प्रभावी व दीर्घकालिक होती है।

③ यह शिक्षा निरन्तर रूप से चलती रहती है जो किसी बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त हो सकती है।

④ अपंग बालको की शिक्षा सामान्य बालको के साथ-साथ होनी चाहिए।

⑤ सामान्य कक्षाएँ, सामान्य स्कूल तथा अन्य आवश्यकताएँ अपंग बालकों के लिए सामान्य बालको से अलग केवल विशिष्ट परिस्थितियों में होनी चाहिए। ऐसी परिस्थितियों जब अपंग बालकों की विशिष्ट आवश्यकताएँ सन्तोषजनक रूप से सामान्य विद्यालय में उपलब्ध कराना सम्भव न हो, तब कुछ चुनिंदा सहायक सामग्री तथा सेवाएँ उपलब्ध करानी चाहिए।

शिक्षा की मुख्यधारा के घटक
Components of Mainstreaming

शिक्षा के मुख्यधारा के तीन घटक हैं—

① शिक्षा में एकीकरण Integration in Education
② शैक्षिक नियोजन तथा कार्यक्रम
③ उत्तरदायित्वों का स्पष्टीकरण—

Scanned with CamScanner

> Date ☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

Characteristics of Mainstreaming
शिक्षा की मुख्य धारा की विशेषताएँ

① शारीरिक रूप से बाधित बालकों की सांसारिक सामाजिक तथा अनुदेशात्मक एकीकरण होना चाहिए।

② शिक्षा की मुख्य धारा से समन्वित बालको के लिए शिक्षण कार्यक्रम सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध होने चाहिए जिससे विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

③ सहायक सेवाएँ तथा कर्मचारी बालकों तथा कक्षा में शिक्षण के लिए अध्यापकों को उपलब्ध होने चाहिए।

④ संशोधित शिक्षा-विधियों एवं सामान्य अध्यापकों के उत्तरदायित्वों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

⑤ सामान्य शिक्षा संस्थाओं में सामान्य शिक्षा का अपंग बालकों के प्रति उत्तरदायित्व होना चाहिए।

⑥ सामान्य शिक्षको को ~~कक्ष~~ कक्षा तथा शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा की मुख्य धारा को प्रभावी करने के लिए सहमति होनी चाहिए तथा इसे स्वीकार करना चाहिए।

⑦ प्रत्येक दशाओं में शारीरिक रूप से बाधित बालकों के माता-पिता भी बालको की देख-रेख, प्रशिक्षण तथा स्थापन में सम्मिलित हों।

Scanned with CamScanner

☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

> Date

दिव्यांग एवं अक्षम बालकों को सशक्त बनाने के लिए शैक्षिक प्रावधान

एक दिव्यांग बालक तथा एक अक्षम बालक सामान्य बालक से भिन्न होता है। यद्यपि उसे उचित प्रयासों द्वारा शिक्षित किया जा सकता है। शिक्षा में ऐसे बालकों को शिक्षित करने हेतु कुछ विशेष प्रावधान करना और कुछ विशेष सुविधाएँ देना अनिवार्य है।

सामान्यतया कुछ विशेष प्रावधान किये जाने चाहिए जो निम्नलिखित हैं—

① उपचार सुविधा (Treatment Facility) —

अपंग तथा बीमार बालकों के उपचार के लिए समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए। इनके उपचार एवं देख-भाल के लिए समय-समय पर विद्यालय में चिकित्सा सीविर एवं डॉक्टर को बुलाना चाहिए। ऐसी स्थिति में उन्हें विद्यालय से समय-समय पर अनुपस्थित होना पड़ सकता है अतः उपस्थिति सम्बन्धी इन्हें छूट दी जानी चाहिए। ऐसे बालकों के लिए सफलता के मानदण्ड सामान्य बालकों के समान नहीं बनाये चाहिए।

बालकों की अपंगता और

Scanned with CamScanner

> Date

☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

अक्षमता उनको सामान्य बालकों के करीब नहीं आने देती है। मानदण्ड बालक की अक्षमता तथा रोग की गम्भीरता के अनुसार निश्चित किये जाने चाहिए।

अतः इन बालकों के समुचित सामाजिक और संवेगात्मक विकास की ओर ध्यान देना शिक्षक का कर्तव्य बन जाता है। इसके लिए शिक्षक को सभी के प्रति एक जागरूकता तथा समझ का विकास करना चाहिए ताकि सामान्य बालक अपंग व रोगी बालको के नजदीक जाने में न हिचकिचाए। केवल उनका साथ ही न दे बल्कि उनमें हीन भावना न आने दें।

Scanned with CamScanner